यूको नर्मदा

वर्ष-4 , अंक - 2

अक्तूबर- मार्च 2026

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust

संपादक मंडल

संरक्षक

श्री नीरज दापोरकर

(उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख)

मार्गदर्शक

श्री रामप्रकाश मिश्र

(सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख)

विशेष सहयोग

श्री बिनोय जोस

(मुख्य प्रबंधक)

श्री सुनील देशमुख

(मुख्य प्रबंधक)

संपादक

श्री शिवम उपाध्याय

(राजभाषा अधिकारी)

संपादकीय पता

यूको बैंक, अंचल कार्यालय,

206, रिद्धी शोपर्स, हज़ीरा रोड, सूरत।

अनुक्रमणिका

⇒ अंचल प्रमुख जी का संदेश.

⇒ उप अंचल प्रमुख जी का संदेश.

⇒ संपादकीय.

⇒ लेख – स्वरोजगार द्वारा महिला सशक्तिकरण:आत्मनिर्भरता से राष्ट्र निर्माण तक

⇒ लेख - बैंकिंग कार्यभार का बैंक अधिकारियों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

⇒ लेख – डिजिटल फ़्रौड: आधुनिक युग का एक अदृश्य खतरा

⇒ लेख – भारत का डिजिटल पब्लिक इनफ्रास्ट्रक्चर : वैश्विक वित्तीय समावेशन का सॉफ्ट पावर

⇒ लेख – कासा कारोबार : बैंकिंग का नया आयाम

⇒ लेख – सोशल मीडिया एवं डिजिटल युग में हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं की भूमिका

⇒ लेख – कैशलेस अर्थव्यवस्था : अवसर और चुनौतियाँ

⇒ अंचल कार्यालय की विभिन्न गतिविधियां.

प्रिय यूकोजन

मुझे इस पत्रिका के माध्यम से दूसरी बार आप सभी यूकोजनों को संबोधित करते हुए प्रसन्नता हो रही है। प्रधान कार्यालय के उच्च प्रबंधन द्वारा मुझे सूरत अंचल का कार्यभार सौपा हैं और इस दिये गए बैंक लक्ष्यों को पूर्ण करने के लिए हम सभी एक टीम,एक स्वप्न,एक लक्ष्य की भावना को आत्मसात करते हुए अपने कॉर्पोरेट लक्ष्यों को प्राप्त करना है।

शाखाओं से अनुरोध है कि अपने ग्राहकों से नियमित रुप से जुड़ाव बनाए रखें और उन्हें डिजिटल उत्पादों से जोड़कर उनकी शाखा पर होने वाली निर्भरता को करने का प्रयास किया जाए और इस कार्य के लिए आप स्टाफ सदस्यों का सहयोग अपेक्षित है। ऐसा करने से हम शारीरिक श्रम को कम कर सकते है। डिजिटल ऑनबोर्डिंग आज के समय की मांग है जिसमें क्यूआर कोड, साउंड बॉक्स, व्हाट्सएप बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, एटीएम कार्ड आदि के लिए प्रधान कार्यालय के मार्गदर्शन में नियमित लॉगिन डे मनाया जा रहा है। ऋण वितरण में उसकी गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाए जिससे फ्रेश स्लिपेज को कम किया जा सके , टर्म लोन और सीसी में मेंडेट जरूर लिया जाए जिससे एसएमए खातों को सुरक्षित किया जा सके। साथ ही कम लागत वाली जमाओं के संग्रहण, डिजिटल माध्यम को प्रोत्साहन देना।
शाखाओं को अपने परिसर को साफ- सुथरा और सुव्यस्थित रखना भी जरूरी है और शाखा में अनावश्यक जो प्रयोग योग्य वस्तु नहीं है उसे संग्रह करके न रखें। शाखा के स्टाफ बैंकिंग जानकारी को अपडेट रखें और ग्राहकों के साथ सांझा करें। शाखा अपने टॉप 100 जमा ग्राहकों का लिस्ट निकालकर उन्हें नियमित रूप से कॉल करें और उन्हें बैंकिंग के जमा ब्याज दरों के बारे में बतायें साथ ही उनकी समस्या भी पूछे। साथ ही ऐसे ग्राहकों का ब्रॉडकास्ट ग्रुप बनाकर उन्हें समय –समय पर बैंकिंग से संबधित जानकारी शेयर किया जाए। शाखा हर माह 15 तारीख से पहले –पहले ग्राहक के साथ मिलन समारोह का आयोजन शाखा में किया जाए और उसका कार्यवृत बनाया जाए। ऐसे बचत खाते जहां शून्य बैलेन्स में खोले गए है उनमे फडिंग कराना सुनिश्चित करें। हर सप्ताह कम से कम 01 लोन खाता खोला किया जाए और उसका संवितरण (Disbursement) भी हो। कोई भी पोर्टल पेंडिंसी होने पर गंभीरता से लिया जाएगा। सभी ऋण खातों में नाच (Nach) अनिवार्य रूप से लिया जाए।

नीरज दापोरकर
अंचल प्रबंधक एवं उपमहाप्रबंधक

प्रिय यूको परिवार,

सूरत अंचल के सभी सदस्यों को पत्रिका 'यूको नर्मदा' के नवीन अंक के प्रकाशन की शुभकामनाएं! यह पत्रिका हमारे अंचल की उपलब्धियों, प्रयासों और समर्पण की गवाही देती है तथा हमारे विचारों एवं अनुभवों को साझा करने का एक सशक्त माध्यम है।

वर्ष 2025-26 में आपके निरंतर सहयोग, परिश्रम और उत्कृष्ट सेवाओं के कारण हमारे अंचल ने अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल कीं। नए जमाने की बैंकिंग सेवाओं, व्यवसायिक विस्तार, अंचल की संपत्तियों में वृद्धि, एवं कुशल प्रबंधन के क्षेत्र में सभी शाखाओं ने उत्कृष्ट योगदान दिया है। हमारी टीम ने सभी चुनौतियों का उत्साहपूर्वक सामना करके वांछित लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है।

आशा है, आने वाला वर्ष 2026-27 भी इसी ऊर्जा और समर्पण के साथ हमारे अंचल, बैंक और ग्राहकों के लिए उन्नति और विकास का वर्ष बनेगा। सभी सहयोगियों, शाखा प्रमुखों, कार्यपालकों एवं कर्मियों से अनुरोध है कि वे अपने दैनिक कार्यों में उत्कृष्टता बनाए रखें, नवीन विचारों को अपनाएँ और बैंक के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रेरित एवं प्रतिबद्ध रहें।पत्रिका के माध्यम से हमारे अनुभव, नवाचार, सफलताओं और सीख को साझा करें, ताकि प्रत्येक सदस्य को प्रेरणा मिल सके और हमारी टीम और अधिक संगठित होकर नए कीर्तिमान हासिल करे।

सभी सहयोगियों के उत्तम स्वास्थ्य, खुशहाली और उज्जवल भविष्य की कामना के साथ,हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ. रामप्रकाश मिश्र
सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख
यूको बैंक सूरत अंचल

प्रिय साथियों

सूरत अंचल की गृह ई-पत्रिका का दूसरा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। आप सभी के अपार सहयोग से मेरा यह संपादन कार्य पूर्ण हो पाया है।

इस पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य हिंदी के प्रगामी प्रयोग को अधिक से अधिक बढ़ाना है एवं हम 'ख' क्षेत्र में होने के कारण हमारी राजभाषा (हिंदी) के प्रति प्रमुख जिम्मेदारी बनती है। अंचल में अधिक से अधिक हिंदी में कार्य हो मेरा ऐसा प्रयास रहता है। साथ ही इस प्रयास का दायित्व मेरे साथ- साथ आप सभी यूकोजन का भी है। जब शाखाओं का राजभाषा निरीक्षण किया जाता है तो शाखाओं में कई राजभाषा के नियमों का उल्लंघन पाया जाता है जैसे फ़ाइल एवं रजिस्टर पर लिखें जाने वाले नाम सिर्फ अँग्रेजी भाषा में होना, मोहरें एक ही भाषा में होना खासकर अँग्रेजी भाषा में उपलब्ध होती है उसका निरीक्षण कर त्रुटियों को दूर किया जाता है।

मेरे द्वारा इस दूसरे अंक में अंचल कार्यालय के अंतर्गत होने वाली विभिन्न गतिविधियों को चित्र के माध्यम से दर्शाया गया है, साथ ही जिन साथियों ने अंचल की पत्रिका के लिए अपने लेख एवं कविता प्रस्तुत करें है, मैं उनके सहयोग के लिए आभार व्यक्त करता हूँ साथ की अन्य साथियों से भी निवेदन करता हूं कि आगामी पत्रिका के लिए वह अपने लेख प्रस्तुत करें।

अंत में, मैं इस अंचल के समस्त साथियों से निवेदन करूंगा कि अगर इस ई-पत्रिका में कुछ कमियाँ हो तो मुझे अवश्य अवगत कराएं ताकि अगला अंक और बेहतरीन ढंग से प्रस्तुत कर सकूँ।

शिवम उपाध्याय
प्रबंधक, राजभाषा
अंचल कार्यालय सूरत

स्वरोजगार द्वारा महिला सशक्तिकरण: आत्मनिर्भरता से राष्ट्र निर्माण तक

भूमिका

"एक पुरुष को शिक्षित करने से आप केवल एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, लेकिन एक महिला को शिक्षित और सशक्त बनाने से आप पूरे परिवार और अंततः राष्ट्र को सशक्त बनाते हैं।" यह उक्ति आज के आधुनिक भारत के संदर्भ में पूरी तरह सटीक बैठती है। 21वीं सदी में महिला सशक्तिकरण केवल एक सामाजिक विमर्श नहीं, बल्कि राष्ट्र की प्रगति का अनिवार्य आधार बन चुका है। जब हम सशक्तिकरण की बात करते हैं, तो 'आर्थिक स्वावलंबन' इसका सबसे मजबूत स्तंभ होता है। स्वरोजगार (Self-Employment) महिलाओं को न केवल आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाता है, बल्कि उन्हें निर्णय लेने की शक्ति, आत्मविश्वास और समाज में एक नई पहचान भी प्रदान करता है।

महिला सशक्तिकरण और स्वरोजगार का अंतर्संबंध:

महिला सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने के लिए सक्षम बनाना। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक समानता शामिल है, लेकिन 'आर्थिक सशक्तिकरण' इन सबका केंद्र है। स्वरोजगार एक ऐसा माध्यम है जहाँ महिलाएँ स्वयं की क्षमता, कौशल और संसाधनों का उपयोग कर अपना उद्यम शुरू करती हैं।
स्वरोजगार के विभिन्न आयाम

सूक्ष्म उद्यम: सिलाई-कढ़ाई, हस्तशिल्प, आचार-पापड़ बनाना आदि।
तकनीकी स्वरोजगार: फ्रीलांसिंग, डिजिटल मार्केटिंग, कोडिंग और कंटेंट क्रिएशन।
कृषि और पशुपालन: डेयरी फार्मिंग, जैविक खेती और मत्स्य पालन।
स्टार्टअप संस्कृति: नवाचार आधारित व्यवसाय (Tech Startups)।
स्वरोजगार से आत्मनिर्भरता का मार्ग

आत्मनिर्भरता का अर्थ केवल पैसा कमाना नहीं है, बल्कि अपनी क्षमताओं पर विश्वास करना है। स्वरोजगार महिलाओं में निम्नलिखित गुणों का विकास करता है:

निर्णय लेने की क्षमता: जब एक महिला अपना व्यवसाय चलाती है, तो वह वित्तीय और रणनीतिक निर्णय स्वयं लेती है। इससे उसके नेतृत्व कौशल में वृद्धि होती है।

वित्तीय स्वतंत्रता: परिवार की आय में योगदान देने से घर में महिला का सम्मान बढ़ता है और वह अपनी छोटी-बड़ी जरूरतों के लिए किसी पर निर्भर नहीं रहती।

समय का सदुपयोग और संतुलन: स्वरोजगार में समय की लचीलापन (Flexibility) होती है, जिससे महिलाएँ घर और काम के बीच बेहतर तालमेल बिठा पाती हैं।

आर्थिक योगदान और राष्ट्र निर्माण

भारत की आधी आबादी महिलाओं की है। यदि यह आधी आबादी आर्थिक गतिविधियों से दूर रहती है, तो राष्ट्र अपनी पूरी क्षमता से विकास नहीं कर सकता।

1. जीडीपी में योगदान

मैकिन्से ग्लोबल इंस्टीट्यूट की एक रिपोर्ट के अनुसार, यदि भारत में श्रम शक्ति में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों के बराबर हो जाए, तो देश की जीडीपी में अरबों डॉलर का इजाफा हो सकता है। स्वरोजगार इस अंतर को पाटने का सबसे प्रभावी तरीका है।

2. **रोजगार सृजन**

एक महिला उद्यमी केवल अपने लिए काम नहीं करती, बल्कि वह अन्य महिलाओं और पुरुषों के लिए भी रोजगार के अवसर पैदा करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में 'स्वयं सहायता समूह' (SHGs) इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

3. **सामाजिक परिवर्तन**

जब महिलाएँ आर्थिक रूप से स्वतंत्र होती हैं, तो समाज में बाल विवाह, घरेलू हिंसा और लैंगिक भेदभाव जैसी कुरीतियों में कमी आती है। एक आत्मनिर्भर महिला अपनी बेटियों की शिक्षा पर अधिक निवेश करती है, जो भविष्य की एक बेहतर पीढ़ी का निर्माण करती है।

सरकारी योजनाएँ और समर्थन तंत्र

भारत सरकार ने स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वाकांक्षी योजनाएँ शुरू की हैं:
योजना का नाम मुख्य उद्देश्य
मुद्रा योजना (MUDRA) छोटे व्यवसायों के लिए बिना गारंटी के ऋण प्रदान करना।
स्टैंड-अप इंडिया महिला उद्यमियों को ₹10 लाख से ₹1 करोड़ तक का ऋण।
महिला ई-हाट महिला उद्यमियों के उत्पादों के लिए ऑनलाइन मार्केटिंग प्लेटफॉर्म।
प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना महिलाओं को विभिन्न ट्रेडों में व्यावसायिक प्रशिक्षण देना।
लखपति दीदी योजना स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं की वार्षिक आय ₹1 लाख तक पहुँचाना।

चुनौतियाँ और समाधान

स्वरोजगार की राह इतनी आसान भी नहीं है। महिलाओं को आज भी कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है:
पूंजी का अभाव: आज भी महिलाओं के नाम पर संपत्ति कम होने के कारण उन्हें बैंक से ऋण लेने में कठिनाई होती है।
पारिवारिक जिम्मेदारी: घर और व्यवसाय के बीच संतुलन बनाना मानसिक और शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण होता है।
बाजार तक पहुँच: ग्रामीण महिलाओं को अपने उत्पादों के लिए सही बाजार और उचित मूल्य नहीं मिल पाता।
तकनीकी ज्ञान की कमी: डिजिटल युग में तकनीकी जानकारी का अभाव एक बड़ी बाधा है।

समाधान:

परिवार और समाज को महिलाओं की उद्यमशीलता का समर्थन करना चाहिए।
डिजिटल साक्षरता और कौशल विकास कार्यक्रमों का विस्तार अनिवार्य है।
महिला-केंद्रित इंक्यूबेशन सेंटर्स और मेंटरशिप प्रोग्राम की संख्या बढ़ानी चाहिए।

भविष्य की राह: डिजिटल क्रांति और महिलाएँ

आज के दौर में 'डिजिटल इंडिया' अभियान ने महिलाओं के लिए स्वरोजगार के नए द्वार खोले हैं। सोशल मीडिया, ई-कॉमर्स (जैसे Amazon, Flipkart, और Etsy) और डिजिटल भुगतान ने भौगोलिक सीमाओं को खत्म कर दिया है। अब एक गाँव की महिला भी अपने हाथ से बनी पेंटिंग या बुने हुए कपड़े पूरी दुनिया में बेच सकती है।

निष्कर्ष

स्वरोजगार के माध्यम से महिला सशक्तिकरण केवल महिलाओं के उत्थान का साधन नहीं है, बल्कि यह एक समृद्ध, विकसित और आत्मनिर्भर भारत की नींव है। जब एक महिला आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होती है, तो वह न केवल अपने परिवार का जीवन स्तर सुधारती है, बल्कि राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को भी गति प्रदान करती है।

'आत्मनिर्भर भारत' का सपना तब तक अधूरा है, जब तक भारत की महिलाएँ पूरी तरह से आत्मनिर्भर नहीं हो जातीं। अतः, यह हम सबकी जिम्मेदारी है कि हम महिलाओं को स्वरोजगार के लिए प्रेरित करें, उन्हें आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराएं और उनके उद्यमी स्वरूप का सम्मान करें।

राजेश कुमार राय
प्रबंधक, यूको बैंक

बैंकिंग कार्यभार का बैंक अधिकारियों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

परिचय

आधुनिक बैंकिंग क्षेत्र में वैश्वीकरण, तकनीकी नवाचार, विनियमन में बदलाव, प्रतिस्पर्धात्मक दबाव और ग्राहकों की बढ़ती अपेक्षाओं के कारण तेज़ी से परिवर्तन हुआ है। इन परिवर्तनों ने जहाँ एक ओर कार्यकुशलता बढ़ाई है और वित्तीय सेवाओं का विस्तार किया है, वहीं दूसरी ओर बैंक अधिकारियों पर कार्यभार और कार्य-दबाव भी काफी बढ़ा दिया है। यह कार्यभार केवल कार्य की मात्रा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें जटिल कार्य, लक्ष्य प्राप्ति का दबाव, ग्राहकों से व्यवहार, तकनीकी अनुकूलन और प्रशासनिक जिम्मेदारियाँ भी शामिल हैं। इसका प्रभाव केवल शारीरिक थकान तक सीमित न रहकर मानसिक स्वास्थ्य और समग्र जीवन गुणवत्ता को भी प्रभावित करता है। इसलिए बैंक अधिकारियों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यभार के प्रभाव को समझना अत्यंत आवश्यक है।

कार्यभार और मानसिक स्वास्थ्य की अवधारणा

बैंकिंग क्षेत्र में कार्यभार
कार्यभार का अर्थ है किसी निश्चित समय में किसी व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले कार्य की मात्रा और जटिलता। बैंकिंग क्षेत्र में कार्यभार में निम्नलिखित शामिल हैं:

* बिक्री और सेवा लक्ष्यों की प्राप्ति (जैसे ऋण, जमा, बीमा)
* जटिल वित्तीय लेन-देन और नियामकीय अनुपालन
* बड़ी संख्या में ग्राहकों की समस्याओं और शिकायतों का समाधान
* प्रशासनिक कार्य, रिपोर्टिंग और दस्तावेज़ीकरण
* डिजिटल बैंकिंग और नई तकनीकों से संबंधित कार्य

आज बैंकिंग का कार्यभार स्थिर नहीं है, बल्कि आर्थिक परिस्थितियों, नीतिगत बदलावों और बाज़ार की मांगों के अनुसार बदलता रहता है।

मानसिक स्वास्थ्य (Mental Well-Being)
मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य व्यक्ति की उस मानसिक स्थिति से है जिसमें वह अपनी क्षमताओं को पहचान सके, जीवन के सामान्य तनावों से निपट सके, उत्पादक रूप से कार्य कर सके और समाज में सकारात्मक योगदान दे सके। इसमें भावनात्मक संतुलन, तनाव प्रबंधन, नौकरी से संतुष्टि और जीवन में संतुलन शामिल है।

बैंकिंग में कार्यभार से उत्पन्न तनाव के कारण

1. अधिक कार्यभार और समय का दबाव
बैंक अधिकारियों को सीमित समय में कई कार्य पूरे करने होते हैं। लगातार समय के दबाव में काम करने से मानसिक तनाव और थकान बढ़ती है।

2. लक्ष्य और बिक्री का दबाव
आधुनिक बैंकिंग में लाभ और बिक्री पर विशेष ज़ोर दिया जाता है। निर्धारित लक्ष्य पूरे न होने पर कर्मचारियों पर मानसिक दबाव बढ़ता है, जिससे चिंता और तनाव उत्पन्न होता है।

3. ग्राहकों से व्यवहार और भावनात्मक श्रम
ग्राहकों से बातचीत में संयम, धैर्य और भावनात्मक नियंत्रण की आवश्यकता होती है। नाराज़ या असंतुष्ट ग्राहकों से निपटना मानसिक रूप से थकाने वाला हो सकता है।

4. तकनीकी दबाव

डिजिटल बैंकिंग, ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म और नई सॉफ़्टवेयर प्रणालियों के कारण कर्मचारियों को निरंतर सीखने और स्वयं को अनुकूलित करने की आवश्यकता होती है, जो मानसिक बोझ बढ़ाता है।

5. प्रशासनिक और नियामकीय जिम्मेदारियाँ
नियामकीय नियमों का पालन, ऑडिट की तैयारी और जोखिम प्रबंधन बैंक अधिकारियों के कार्यभार को और बढ़ा देता है।

6. लंबे कार्य घंटे और कार्य-जीवन असंतुलन
अधिक समय तक काम करने से व्यक्तिगत जीवन के लिए समय कम बचता है, जिससे मानसिक असंतुलन उत्पन्न होता है।

मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यभार के प्रभाव
तनाव और चिंता
अत्यधिक कार्यभार के कारण लगातार तनाव बना रहता है। इसके लक्षणों में शामिल हैं:
* अत्यधिक चिंता
* चिड़चिड़ापन
* नींद की समस्या
* एकाग्रता में कमी

यह तनाव निर्णय लेने की क्षमता और कार्यकुशलता को प्रभावित करता है।

बर्नआउट (Burnout)
बर्नआउट लंबे समय तक चलने वाले कार्य तनाव का परिणाम है। इसके तीन मुख्य घटक हैं:

1. भावनात्मक थकान – मानसिक और भावनात्मक रूप से खाली महसूस करना
2. निरपेक्षता – काम और ग्राहकों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण
3. व्यक्तिगत उपलब्धि में कमी – स्वयं को अक्षम या असफल महसूस करना

बर्नआउट से कार्यक्षमता और प्रेरणा दोनों कम हो जाती हैं।

नौकरी से असंतोष और कार्य-जीवन संतुलन में कमी

अधिक कार्यभार के कारण व्यक्ति परिवार, सामाजिक जीवन और आराम के लिए समय नहीं निकाल पाता। इससे:
* नौकरी से असंतोष
* जीवन की गुणवत्ता में गिरावट
* पारिवारिक और सामाजिक संबंधों में तनाव

चिंता और अवसाद
लगातार दबाव और समर्थन की कमी से चिंता और अवसाद जैसी मानसिक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसके लक्षण हैं:
* उदासी और निराशा
* कार्य में रुचि की कमी
* आत्मविश्वास में गिरावट

शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

मानसिक तनाव का प्रभाव शारीरिक स्वास्थ्य पर भी पड़ता है, जैसे:

* उच्च रक्तचाप
* सिरदर्द
* थकान
* अनिद्रा

मनोवैज्ञानिक सिद्धांत और कार्यभार
संज्ञानात्मक भार सिद्धांत
अत्यधिक मानसिक कार्यभार मस्तिष्क की क्षमता से अधिक हो जाता है, जिससे गलतियाँ और तनाव बढ़ता है।

प्रयास–पुरस्कार असंतुलन
यदि कर्मचारी द्वारा किए गए प्रयासों के अनुपात में पुरस्कार या मान्यता न मिले, तो मानसिक असंतोष और तनाव बढ़ता है।

मांग–नियंत्रण मॉडल
जब कार्य की मांग अधिक हो और उस पर नियंत्रण कम हो, तो तनाव का स्तर बढ़ जाता है।

संगठनात्मक कारक
तनाव बढ़ाने वाले कारक
* असहयोगी प्रबंधन
* अव्यवहारिक लक्ष्य
* अपर्याप्त प्रशिक्षण
* दंडात्मक कार्य संस्कृत

तनाव कम करने वाले कारक
* सहायक नेतृत्व
* यथार्थवादी लक्ष्य
* कर्मचारी सहायता कार्यक्रम
* लचीले कार्य घंटे
* मानसिक स्वास्थ्य पहल

संगठन पर प्रभाव
उत्पादकता में कमी
मानसिक तनाव से कार्यकुशलता घटती है और अनुपस्थिति बढ़ती है।

त्रुटियों और जोखिम में वृद्धि
तनाव के कारण निर्णय क्षमता प्रभावित होती है, जिससे वित्तीय त्रुटियों की संभावना बढ़ती है।

कर्मचारियों का पलायन
मानसिक असंतोष के कारण कर्मचारी नौकरी छोड़ सकते हैं।

ग्राहक सेवा पर नकारात्मक प्रभाव
तनावग्रस्त कर्मचारी ग्राहकों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद नहीं कर पाते।

समाधान और सुधार के उपाय
संगठनात्मक स्तर पर
1. कार्यभार का संतुलन
2. यथार्थवादी लक्ष्य निर्धारण
3. मानसिक स्वास्थ्य प्रशिक्षण

कार्य संस्कृति में सुधार
* कार्य-जीवन संतुलन को बढ़ावा
* मानसिक स्वास्थ्य पर खुली चर्चा
* नियमित फीडबैक प्रणाली

व्यक्तिगत स्तर पर
* समय प्रबंधन
* ध्यान और योग
* सहकर्मियों का सहयोग
* पेशेवर सहायता लेना

निष्कर्ष
बैंकिंग क्षेत्र में बढ़ता कार्यभार बैंक अधिकारियों के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डालता है। तनाव, बर्नआउट, नौकरी से असंतोष और मानसिक समस्याएँ न केवल कर्मचारियों को प्रभावित करती हैं, बल्कि संगठन की उत्पादकता और सेवा गुणवत्ता को भी कम करती हैं। इसलिए आवश्यक है कि बैंक प्रबंधन मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता दे, सहायक कार्य वातावरण बनाए और संतुलित कार्य प्रणाली विकसित करे। स्वस्थ कर्मचारी ही एक सशक्त और सफल बैंकिंग प्रणाली की नींव होते हैं।

संदीप कुमार वर्मा
प्रबंधक, यूको बैंक

डिजिटल फ्रॉड: आधुनिक युग का एक अदृश्य खतरा

डिजिटल क्रांति ने हमारे जीवन को सुगम बनाया है, लेकिन इसके साथ ही इसने 'डिजिटल फ्रॉड' या 'साइबर अपराध' जैसी गंभीर चुनौतियों को भी जन्म दिया है। आज के समय में, जब हमारी बैंकिंग, खरीदारी और सामाजिक मेलजोल पूरी तरह से इंटरनेट पर निर्भर है, जालसाजों ने ठगी के नए और परिष्कृत तरीके विकसित कर लिए हैं।

डिजिटल फ्रॉड क्या है?

डिजिटल फ्रॉड से तात्पर्य उन धोखाधड़ी वाली गतिविधियों से है जो इंटरनेट या डिजिटल उपकरणों (जैसे स्मार्टफोन, कंप्यूटर) के माध्यम से की जाती हैं। इसका मुख्य उद्देश्य पीड़ित की संवेदनशील जानकारी जैसे पासवर्ड, ओटीपी (OTP), क्रेडिट कार्ड विवरण चुराना और उनके बैंक खातों से धन की चोरी करना होता है।

डिजिटल फ्रॉड के प्रमुख प्रकार

जालसाज तकनीकी कौशल और मनोवैज्ञानिक दबाव (Social Engineering) का उपयोग करके लोगों को अपना शिकार बनाते हैं। इसके कुछ प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं:

1. **फिशिंग (Phishing) और स्मिशिंग (Smishing)**

यह सबसे आम तरीका है। इसमें जालसाज आपको ईमेल या एसएमएस (SMS) भेजते हैं जो बिल्कुल आपके बैंक, ई-कॉमर्स वेबसाइट या सरकारी एजेंसी जैसा दिखता है। इसमें एक लिंक होता है, जिस पर क्लिक करते ही आपकी निजी जानकारी हैकर्स के पास पहुँच जाती है।

2. केवाईसी अपडेट फ्रॉड (KYC Update Fraud)

धोखेबाज कॉल करके दावा करते हैं कि आपका बैंक खाता, सिम कार्ड या पेटीएम वॉलेट बंद होने वाला है क्योंकि आपका KYC अधूरा है। वे आपको एक ऐप (जैसे AnyDesk या TeamViewer) डाउनलोड करने को कहते हैं, जिससे वे आपके फोन का रिमोट एक्सेस प्राप्त कर लेते हैं।

3. **यूपीआई फ्रॉड (UPI Fraud)**

आजकल 'रिक्वेस्ट मनी' (Request Money) फीचर का गलत इस्तेमाल बढ़ा है। जालसाज आपको पैसे भेजने के बहाने एक लिंक भेजते हैं और जैसे ही आप अपना UPI PIN डालते हैं, पैसा आपके खाते में आने के बजाय आपके खाते से कट जाता है।

4. **निवेश और वर्क फ्रॉम होम स्कैम**

सोशल मीडिया पर 'घर बैठे लाखों कमाएं' या 'क्रिप्टोकरेंसी में निवेश पर डबल रिटर्न' के लुभावने विज्ञापन दिखाए जाते हैं। शुरुआत में लोगों को थोड़ा मुनाफा दिया जाता है ताकि उनका भरोसा जीता जा सके, और बाद में बड़ी रकम लेकर जालसाज गायब हो जाते हैं।

5. **ओएलएक्स (OLX) और फेसबुक मार्केटप्लेस फ्रॉड**

पुराने सामान को खरीदने या बेचने के नाम पर सेना का अधिकारी बनकर लोगों को ठगा जाता है। वे एडवांस पेमेंट के नाम पर क्यूआर कोड (QR Code) भेजते हैं, जिसे स्कैन करते ही पीड़ित के खाते से पैसे निकल जाते हैं।

डिजिटल फ्रॉड होने के मुख्य कारण

जागरूकता की कमी: तकनीक के बढ़ते उपयोग के बावजूद, एक बड़ा वर्ग अभी भी सुरक्षित डिजिटल लेनदेन के तरीकों से अनजान है।

लालच और जल्दबाजी: भारी डिस्काउंट या बिना मेहनत के पैसे कमाने का लालच लोगों को गलत लिंक पर क्लिक करने के लिए मजबूर कर देता है।

डेटा लीक: कई बार विभिन्न वेबसाइटों से यूजर का डेटा लीक हो जाता है, जिसका उपयोग अपराधी फिशिंग के लिए करते हैं।

कमजोर पासवर्ड: एक ही पासवर्ड का हर जगह उपयोग करना या मोबाइल नंबर/जन्म तिथि को पासवर्ड बनाना जोखिम भरा होता है।

खुद को डिजिटल फ्रॉड से कैसे बचाएं?

सावधानी ही डिजिटल सुरक्षा की पहली सीढ़ी है। निम्नलिखित उपायों को अपनाकर आप सुरक्षित रह सकते हैं:

ओटीपी और पिन साझा न करें: बैंक का कोई भी कर्मचारी आपसे कभी भी आपका OTP, CVV या PIN नहीं मांगता। इसे किसी के साथ साझा न करें।

अज्ञात लिंक पर क्लिक न करें: अनजान नंबरों से आए एसएमएस या ईमेल में दिए गए लिंक पर क्लिक करने से बचें। हमेशा आधिकारिक वेबसाइट का ही उपयोग करें।

टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन (2FA): अपने सभी सोशल मीडिया और बैंकिंग ऐप्स पर 'टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन' सक्रिय करें। इससे सुरक्षा की एक अतिरिक्त परत जुड़ जाती है।

स्क्रीन शेयरिंग ऐप्स से बचें: किसी अनजान व्यक्ति के कहने पर AnyDesk, ScreenShare जैसे ऐप्स कभी डाउनलोड न करें।

नियमित रूप से पासवर्ड बदलें: अपने बैंकिंग और ईमेल पासवर्ड को कठिन बनाएं (अक्षर, अंक और विशेष वर्णों का मेल) और समय-समय पर बदलते रहें।

यदि आपके साथ फ्रॉड हो जाए, तो क्या करें?

यदि आप या आपके आसपास कोई डिजिटल फ्रॉड का शिकार होता है, तो घबराने के बजाय तुरंत ये कदम उठाएं:
गोल्डन आवर (Golden Hour): ठगी के पहले 1-2 घंटे बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। जितनी जल्दी आप रिपोर्ट करेंगे, पैसे वापस मिलने की संभावना उतनी ही अधिक होगी।
हेल्पलाइन नंबर 1930: भारत सरकार के राष्ट्रीय साइबर अपराध हेल्पलाइन नंबर 1930 पर तुरंत कॉल करें।

ऑनलाइन शिकायत: www.cybercrime.gov.in पर जाकर अपनी शिकायत दर्ज करें।
बैंक को सूचित करें: तुरंत अपने बैंक को फोन करके कार्ड या खाता ब्लॉक करवाएं।

निष्कर्ष

डिजिटल दुनिया सुविधाओं का भंडार है, लेकिन यहाँ सावधानी हटी तो दुर्घटना घटी। तकनीक का उपयोग करते समय हमेशा सतर्क रहें और किसी भी 'शॉर्टकट' या 'अविश्वसनीय ऑफर' से दूर रहें। डिजिटल साक्षरता ही इस नए युग के अपराधों से बचने का एकमात्र अचूक अस्त्र है।

अजीत गुप्ता

वरिष्ठ प्रबंधक, यूको बैंक

भारत का डिजिटल पब्लिक इनफ्रास्ट्रक्चर: वैश्विक वित्तीय समावेशन का सॉफ्ट पावर

प्रस्तावना

भारत ने पिछले एक दशक में डिजिटल पब्लिक इनफ्रास्ट्रक्चर (DPI) के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। आधार, यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI), डिजिलॉकर, और भारत बिल पेमेंट सिस्टम जैसे प्लेटफार्म ने न केवल घरेलू स्तर पर वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दिया है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारत को एक **डिजिटल सॉफ्ट पावर** के रूप में स्थापित किया है।

वित्तीय समावेशन और भारत का मॉडल

UPI क्रांति: UPI ने भारत में लाखों लोगों को औपचारिक वित्तीय प्रणाली से जोड़ा। आज यह प्रतिदिन अरबों लेन-देन को संभालता है।

आधार आधारित पहचान: आधार ने डिजिटल पहचान को सार्वभौमिक बनाया, जिससे बैंकिंग, बीमा और सरकारी सेवाओं तक पहुंच आसान हुई।

कम लागत, उच्च प्रभाव: भारत का DPI कम लागत पर बड़े पैमाने पर लागू किया गया है, जो विकासशील देशों के लिए एक आदर्श मॉडल है।

वैश्विक मंचों पर भारत की भूमिका:

G20 शिखर सम्मेलन: भारत ने DPI को "ग्लोबल पब्लिक गुड" के रूप में प्रस्तुत किया। इससे यह स्पष्ट हुआ कि भारत अपने डिजिटल अनुभव को साझा कर वैश्विक वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देना चाहता है।

BRICS सहयोग: BRICS देशों में डिजिटल भुगतान और पहचान प्रणालियों के साझा उपयोग से व्यापारिक प्रक्रियाएं तेज और पारदर्शी हो सकती हैं।

ASEAN देशों के साथ साझेदारी: ASEAN क्षेत्र में भारत के साथ डिजिटल भुगतान और पहचान प्रणालियों का एकीकरण क्षेत्रीय व्यापार और पर्यटन को गति देगा।

एशियाई देशों के साथ सहयोग

सीमा-पार भुगतान नेटवर्क: भारत और सिंगापुर के बीच UPI–PayNow लिंक इसका उदाहरण है, जिसने सीमा-पार लेन-देन को सरल और सस्ता बनाया।

डिजिटल पहचान का आदान-प्रदान: आधार जैसी प्रणालियों के अनुभव से अन्य देशों को सुरक्षित और समावेशी पहचान ढांचे बनाने में मदद मिल सकती है।

साइबर सुरक्षा और डेटा प्रोटेक्शन: सहयोग से क्षेत्रीय स्तर पर मजबूत डिजिटल सुरक्षा मानक विकसित किए जा सकते हैं।

एकीकृत डिजिटल अर्थव्यवस्था की दिशा

व्यापार में सुगमता: डिजिटल भुगतान और ई-गवर्नेंस से व्यापारिक प्रक्रियाएं तेज और पारदर्शी होंगी।

स्टार्टअप और नवाचार: साझा डिजिटल प्लेटफॉर्म से एशियाई देशों में स्टार्टअप्स को नए अवसर मिलेंगे।

वित्तीय समावेशन: ग्रामीण और वंचित वर्गों तक डिजिटल सेवाओं की पहुंच बढ़ेगी, जिससे आर्थिक असमानता कम होगी।

निष्कर्ष

भारत का डिजिटल पब्लिक इनफ्रास्ट्रक्चर केवल तकनीकी नवाचार नहीं है, बल्कि यह **वैश्विक वित्तीय समावेशन का सॉफ्ट पावर** भी है। G20, BRICS और ASEAN जैसे मंचों पर भारत की सक्रिय भूमिका यह दर्शाती है कि डिजिटल सहयोग से एक **एकीकृत एशियाई डिजिटल अर्थव्यवस्था** का निर्माण संभव है। यह भविष्य में क्षेत्रीय स्थिरता, आर्थिक विकास और सामाजिक समावेशन का आधार बनेगा।

अनुराग रमण
वरिष्ठ प्रबंधक, यूको बैंक

कासा कारोबार: बैंकिंग का नया आयाम

प्रस्तावना

भारतीय बैंकिंग प्रणाली लगातार परिवर्तनशील है। तकनीकी नवाचार, डिजिटलाइजेशन और ग्राहकों की बदलती आवश्यकताओं ने बैंकिंग को एक नए आयाम तक पहुँचा दिया है। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण अवधारणा है **CASA (Current Account Savings Account)** कारोबार। यह न केवल बैंकों की वित्तीय मजबूती का आधार है, बल्कि ग्राहकों के लिए भी सुविधा और लाभ का स्रोत है।

CASA कारोबार क्या है?

- **CASA** का अर्थ है *Current Account* और *Savings Account*।
- बैंक अपने ग्राहकों से इन खातों के माध्यम से जमा राशि प्राप्त करते हैं।
- चूँकि चालू खाते (Current Account) पर ब्याज नहीं दिया जाता और बचत खाते (Savings Account) पर बहुत कम ब्याज दिया जाता है, इसलिए बैंकों के लिए यह सबसे सस्ता फंडिंग स्रोत होता है।
- CASA अनुपात जितना अधिक होगा, बैंक की लाभप्रदता उतनी ही मजबूत होगी।

CASA कारोबार का महत्व

कम लागत पर फंडिंग

बैंकों को फंडिंग के लिए महंगे स्रोतों (जैसे फिक्स्ड डिपॉजिट या उधारी) पर निर्भर नहीं रहना पड़ता।

CASA खातों से प्राप्त राशि पर ब्याज व्यय बहुत कम होता है।

लिक्विडिटी और स्थिरता

चालू और बचत खाते में जमा राशि अक्सर लंबे समय तक बनी रहती है।

इससे बैंक को स्थिर और निरंतर नकदी प्रवाह मिलता है।

क्रेडिट विस्तार

CASA से प्राप्त सस्ती पूंजी का उपयोग बैंक ऋण देने में करते हैं।

इससे बैंकिंग सेक्टर में क्रेडिट ग्रोथ होती है।

ग्राहक जुड़ाव

CASA खाते ग्राहकों को बैंकिंग सेवाओं से जोड़ते हैं।

डिजिटल बैंकिंग, मोबाइल ऐप्स और नेट बैंकिंग के माध्यम से ग्राहक लगातार बैंक से जुड़े रहते हैं.

CASA कारोबार और डिजिटल बैंकिंग

डिजिटल क्रांति ने CASA कारोबार को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है।

- **UPI और मोबाइल बैंकिंग** ने बचत खातों को लेन-देन का केंद्र बना दिया है।
- **ऑनलाइन पेमेंट्स** और **ऑटो डेबिट सुविधाएँ** ने चालू खातों की उपयोगिता बढ़ाई है।
- **फिनटेक कंपनियों** के साथ साझेदारी ने CASA कारोबार को और प्रतिस्पर्धी बना दिया है।

CASA कारोबार की चुनौतियाँ

ग्राहक अपेक्षाएँ

- ग्राहक अब केवल जमा और निकासी तक सीमित नहीं हैं।
- वे बेहतर ब्याज दर, डिजिटल सुविधा और त्वरित सेवा चाहते हैं।

प्रतिस्पर्धा

- निजी बैंक और पेमेंट बैंक CASA कारोबार में आक्रामक रणनीति अपना रहे हैं।
- सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को प्रतिस्पर्धा में बने रहने के लिए नवाचार करना पड़ रहा है।

तकनीकी सुरक्षा

- डिजिटल लेन-देन में साइबर सुरक्षा एक बड़ी चुनौती है।
- CASA कारोबार की विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए बैंकों को मजबूत सुरक्षा ढाँचा अपनाना होगा।

CASA कारोबार का भविष्य

- **AI और बिग डेटा** से ग्राहक व्यवहार का विश्लेषण कर बैंक व्यक्तिगत सेवाएँ देंगे।
- **ब्लॉकचेन तकनीक** से लेन-देन और अधिक सुरक्षित होंगे।
- **ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों** में CASA कारोबार की अपार संभावनाएँ हैं।
- **नियो बैंकिंग (Neo Banking)** CASA कारोबार को पूरी तरह डिजिटल और पेपरलेस बना देगी।

निष्कर्ष

CASA कारोबार बैंकिंग का वह आयाम है जिसने वित्तीय जगत को नई दिशा दी है। यह न केवल बैंकों की लाभप्रदता बढ़ाता है, बल्कि ग्राहकों को भी सुविधा, सुरक्षा और डिजिटल अनुभव प्रदान करता है। आने वाले समय में CASA कारोबार बैंकिंग सेक्टर की रीढ़ बनेगा और भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूती देगा।

संदीप कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक, यूको बैंक

सोशल मीडिया एवं डिजिटल युग में हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं की भूमिका

प्रस्तावना

21वीं सदी को डिजिटल क्रांति का युग कहा जा सकता है। इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया ने संचार, शिक्षा, व्यापार, राजनीति और संस्कृति के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। इस युग में भाषा केवल संवाद का साधन नहीं रही, बल्कि पहचान, संस्कृति और विचारों के प्रसार का माध्यम बन गई है। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाएँ इस डिजिटल युग में अपनी सशक्त भूमिका निभा रही हैं।

भाषा और संचार का बदलता स्वरूप

- पहले संचार का माध्यम पत्र, रेडियो और अख़बार हुआ करता था।
- आज व्हाट्सऐप, फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर (X), यूट्यूब और ब्लॉगिंग प्लेटफ़ॉर्म ने संवाद को तात्कालिक और वैश्विक बना दिया है।
- लोग अपनी मातृभाषा में विचार व्यक्त करना पसंद करते हैं, जिससे हिन्दी और भारतीय भाषाओं का प्रयोग बढ़ा है।

डिजिटल युग में हिन्दी की स्थिति

- भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या विश्व में सबसे अधिक है।
- गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, अमेज़न और अन्य तकनीकी कंपनियाँ हिन्दी सहित भारतीय भाषाओं में सेवाएँ उपलब्ध करा रही हैं।
- हिन्दी ब्लॉगिंग, यूट्यूब चैनल, पॉडकास्ट और ई-पुस्तकें हिन्दी को डिजिटल मंच पर लोकप्रिय बना रही हैं।
- हिन्दी साहित्यकार और पत्रकार अब ऑनलाइन माध्यम से लाखों पाठकों तक पहुँच पा रहे हैं।

भारतीय भाषाओं की भूमिका

भारत बहुभाषी देश है। यहाँ 22 अनुसूचित भाषाएँ और सैकड़ों बोलियाँ हैं। डिजिटल माध्यम ने इन भाषाओं को संरक्षित करने और आगे बढ़ाने का अवसर दिया है।

- क्षेत्रीय भाषाओं में समाचार पोर्टल, ई-पेपर और ई-लाइब्रेरी उपलब्ध हैं।
- भोजपुरी, तमिल, तेलुगु, बंगाली, मराठी आदि भाषाओं में सोशल मीडिया पर सामग्री का प्रसार तेजी से हो रहा है।
- क्षेत्रीय भाषाओं में संगीत, सिनेमा और साहित्य डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर नई ऊँचाइयाँ छू रहे हैं।

शिक्षा और ई-लर्निंग में भाषाओं की भूमिका

- ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफ़ॉर्म जैसे BYJU’s, Unacademy, Coursera आदि अब हिन्दी और भारतीय भाषाओं में पाठ्यक्रम उपलब्ध करा रहे हैं।
- ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।
- डिजिटल पुस्तकालयों और ई-पाठ्यपुस्तकों ने भाषाओं को सुलभ बनाया है।

पत्रकारिता और सूचना प्रसार

- डिजिटल पत्रकारिता ने हिन्दी और भारतीय भाषाओं को नई पहचान दी है।
- हिन्दी समाचार पोर्टल जैसे "दैनिक भास्कर", "अमर उजाला", "जनसत्ता" आदि ऑनलाइन माध्यम से लाखों पाठकों तक पहुँच रहे हैं।
- क्षेत्रीय भाषाओं में भी डिजिटल समाचार चैनल और पोर्टल लोकप्रिय हो रहे हैं।

साहित्य और संस्कृति का प्रसार

- सोशल मीडिया पर हिन्दी कविता, कहानी और निबंध का व्यापक प्रसार हो रहा है।

- ब्लॉगिंग और ई-पुस्तक प्रकाशन ने नए लेखकों को मंच दिया है।
- भारतीय भाषाओं में लोककथाएँ, लोकगीत और सांस्कृतिक सामग्री डिजिटल माध्यम से संरक्षित हो रही हैं।

राजनीति और जनसंपर्क

- राजनीतिक दल और नेता सोशल मीडिया पर हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग कर जनता से जुड़ते हैं।
- चुनाव प्रचार में डिजिटल माध्यम की भूमिका बढ़ गई है।
- हिन्दी और भारतीय भाषाओं में संदेश देने से जनसंपर्क अधिक प्रभावी होता है।

व्यापार और ई-कॉमर्स

- ई-कॉमर्स कंपनियाँ अब हिन्दी और भारतीय भाषाओं में सेवाएँ उपलब्ध करा रही हैं।
- ग्राहक अपनी भाषा में उत्पाद खोज और खरीद सकते हैं।
- डिजिटल भुगतान ऐप्स भी हिन्दी और अन्य भाषाओं में उपलब्ध हैं।

चुनौतियाँ

- अंग्रेज़ी का वर्चस्व अभी भी डिजिटल दुनिया में अधिक है।
- तकनीकी शब्दावली का हिन्दी और अन्य भाषाओं में अभाव।
- क्षेत्रीय भाषाओं में मानकीकरण की कमी।
- कई बार हिन्दी और भारतीय भाषाओं को "गैर-प्रोफेशनल" मानकर नज़रअंदाज़ किया जाता है।

अवसर

- डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर हिन्दी और भारतीय भाषाओं में सामग्री की माँग लगातार बढ़ रही है।
- ई-लर्निंग, ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल पुस्तकालयों में भारतीय भाषाओं का प्रयोग बढ़ रहा है।

- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन ट्रांसलेशन तकनीक से भाषाओं का अनुवाद और प्रसार आसान हुआ है।
- हिन्दी और भारतीय भाषाएँ स्टार्टअप, ई-कॉमर्स और मनोरंजन उद्योग में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

भविष्य की संभावनाएँ

- यदि तकनीकी विकास के साथ भाषाओं को जोड़ा जाए, तो हिन्दी और भारतीय भाषाएँ विश्व स्तर पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा सकती हैं।
- सरकार और निजी संस्थाओं को भाषाओं के डिजिटल विकास में निवेश करना चाहिए।
- शिक्षा, पत्रकारिता, साहित्य और व्यापार में भाषाओं की भूमिका और बढ़ेगी।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया और डिजिटल युग ने हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं को नई ऊर्जा दी है। यह भाषाएँ अब केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि डिजिटल पहचान और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक बन चुकी हैं। यदि हम तकनीकी विकास के साथ अपनी भाषाओं को जोड़ें, तो हिन्दी और भारतीय भाषाएँ न केवल भारत में, बल्कि विश्व स्तर पर भी अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा सकती हैं।

आद्यशा प्रियदर्शनी दास
प्रबंधक , यूको बैंक

कैशलेस अर्थव्यवस्था : अवसर और चुनौतियाँ

कैशलेस अर्थव्यवस्था का अर्थ है ऐसी व्यवस्था जिसमें लेन-देन मुख्यतः डिजिटल माध्यमों से होता है और नकदी का प्रयोग न्यूनतम रह जाता है। यह अवधारणा आधुनिक समय में अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है क्योंकि तकनीकी विकास, इंटरनेट की पहुँच और मोबाइल क्रांति ने हमारे जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में कैशलेस अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना न केवल आर्थिक पारदर्शिता के लिए आवश्यक है, बल्कि यह विकास की गति को भी तेज कर सकता है।

कैशलेस अर्थव्यवस्था का महत्व

कैशलेस व्यवस्था का सबसे बड़ा महत्व पारदर्शिता है। जब लेन-देन डिजिटल माध्यम से होता है तो उसका रिकॉर्ड स्वतः तैयार हो जाता है। इससे भ्रष्टाचार और काले धन पर नियंत्रण आसान हो जाता है। नकदी आधारित लेन-देन में अक्सर पारदर्शिता की कमी रहती है, जबकि डिजिटल भुगतान से हर लेन-देन का हिसाब दर्ज होता है। यह व्यवस्था कर संग्रहण को भी सरल बनाती है और सरकार की आय में वृद्धि करती है।

अवसर

1. **सुविधा और गति**: डिजिटल भुगतान से लेन-देन तुरंत और कहीं भी संभव हो जाता है। मोबाइल ऐप्स, इंटरनेट बैंकिंग और यूपीआई जैसे साधनों ने आम नागरिकों को कहीं भी और कभी भी भुगतान करने की सुविधा दी है। इससे समय की बचत होती है और नकदी रखने की आवश्यकता कम हो जाती है।
2. **वित्तीय समावेशन**: ग्रामीण और दूरदराज़ क्षेत्रों में मोबाइल और इंटरनेट के माध्यम से बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध कराई जा सकती हैं। इससे उन लोगों को भी औपचारिक वित्तीय प्रणाली से जोड़ा जा सकता है जो पहले इससे वंचित थे।
3. **लागत में कमी**: नोट छापने, परिवहन और सुरक्षा पर होने वाला खर्च घटता है। नकदी प्रबंधन में लगने वाले संसाधनों की बचत होती है।

4. **डिजिटल नवाचार**: फिनटेक कंपनियों और स्टार्टअप्स को नए अवसर मिलते हैं। डिजिटल भुगतान के नए साधन और तकनीक विकसित होती हैं, जिससे रोजगार और निवेश के अवसर बढ़ते हैं।
5. **वैश्विक प्रतिस्पर्धा**: कैशलेस व्यवस्था से देश की अर्थव्यवस्था आधुनिक और प्रतिस्पर्धी बनती है। विदेशी निवेशकों का विश्वास बढ़ता है और अंतरराष्ट्रीय व्यापार में सुविधा होती है।

चुनौतियाँ

1. **डिजिटल साक्षरता की कमी**: ग्रामीण और अशिक्षित वर्ग को तकनीक अपनाने में कठिनाई होती है। यदि लोग डिजिटल माध्यमों को सही ढंग से समझ नहीं पाएंगे तो वे धोखाधड़ी और गलतियों का शिकार हो सकते हैं।
2. **साइबर सुरक्षा खतरे**: हैकिंग, धोखाधड़ी और डेटा चोरी जैसी घटनाएँ लोगों के विश्वास को कमजोर करती हैं। डिजिटल भुगतान को सुरक्षित बनाने के लिए मजबूत साइबर सुरक्षा ढाँचे की आवश्यकता है।
3. **इंटरनेट और बिजली पर निर्भरता**: कमजोर नेटवर्क वाले क्षेत्रों में लेन-देन बाधित हो सकता है, जिससे लोगों को असुविधा होती है।
4. **विश्वास की समस्या**: कई लोग नकद को सुरक्षित मानते हैं और डिजिटल भुगतान पर भरोसा नहीं करते। यह मानसिकता बदलना आसान नहीं है।
5. **प्रारंभिक लागत**: छोटे व्यापारियों और दुकानदारों के लिए डिजिटल उपकरण और प्रशिक्षण महंगे साबित हो सकते हैं। इससे वे इस व्यवस्था को अपनाने में हिचकिचाते हैं।

भारत में कैशलेस अर्थव्यवस्था की स्थिति

भारत में कैशलेस व्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने कई कदम उठाए हैं। नोटबंदी के बाद डिजिटल भुगतान में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। यूपीआई, भीम ऐप और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म ने आम नागरिकों को सरल और सुरक्षित भुगतान की सुविधा दी है। आज छोटे दुकानदार से लेकर बड़े उद्योगपति तक डिजिटल भुगतान का उपयोग कर रहे हैं।

हालाँकि, अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की कमी और डिजिटल साक्षरता की समस्या बनी हुई है। साइबर अपराधों की घटनाएँ भी लोगों को सतर्क करती हैं। सरकार और निजी क्षेत्र को मिलकर इन चुनौतियों का समाधान करना होगा।

समाधान और आगे की राह

कैशलेस अर्थव्यवस्था को सफल बनाने के लिए कुछ कदम आवश्यक हैं:

- **डिजिटल शिक्षा**: लोगों को डिजिटल भुगतान के बारे में जागरूक करना और उन्हें प्रशिक्षित करना।
- **साइबर सुरक्षा**: मजबूत सुरक्षा ढाँचा तैयार करना और लोगों को सुरक्षित लेन-देन के तरीकों की जानकारी देना।
- **बुनियादी ढाँचा**: ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट और बिजली की सुविधा सुनिश्चित करना।
- **विश्वास निर्माण**: लोगों को डिजिटल भुगतान के लाभ और सुरक्षा के बारे में समझाना।
- **सहयोग**: सरकार, निजी क्षेत्र और नागरिकों को मिलकर इस व्यवस्था को आगे बढ़ाना होगा।

निष्कर्ष

कैशलेस अर्थव्यवस्था आधुनिक समय की आवश्यकता है। यह पारदर्शिता, सुविधा और विकास को बढ़ावा देती है। लेकिन इसके सफल क्रियान्वयन के लिए डिजिटल शिक्षा, साइबर सुरक्षा और बुनियादी ढाँचे को मजबूत करना अनिवार्य है। यदि अवसरों और चुनौतियों के बीच संतुलन स्थापित किया जाए तो कैशलेस अर्थव्यवस्था भारत को एक सशक्त और आधुनिक राष्ट्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

दिनेश सैनी
वरिष्ठ प्रबंधक

अंचल कार्यालय में एमएसएमई कार्निवल का आयोजन

यूको बैंक UCO BANK
Welcome All The Esteemed Customer
RESOURCES, MSME &
AGRI CARNIVAL
EMPOWER YOUR FUTURE
EASY LOAN APPLICATION ASSISTANCES
83rd YEAR OF THE NATION'S TRUST
UCO Carnival
ACROSS THE COUNTRY
Follow us

यूको बैंक UCO BANK
Welcome All The Esteemed Customer
UCO BANK

अंचल कार्यालय द्वारा बैंक स्थापना दिवस का आयोजन

VATSALYAPURAM
HAPPY

अंचल कार्यालय में स्वतंत्रता दिवस का आयोजन

अंचल कार्यालय द्वारा सुविधा सैलरी सेवा का प्रचार

अंचल कार्यालय द्वारा महिला दिवस एवं सम्मान का आयोजन

UCO BANK

अंचल कार्यालय में शाखा प्रमुखों की बैठक का आयोजन

सत्यमेव जयते

हिंदी दिवस 2025

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश

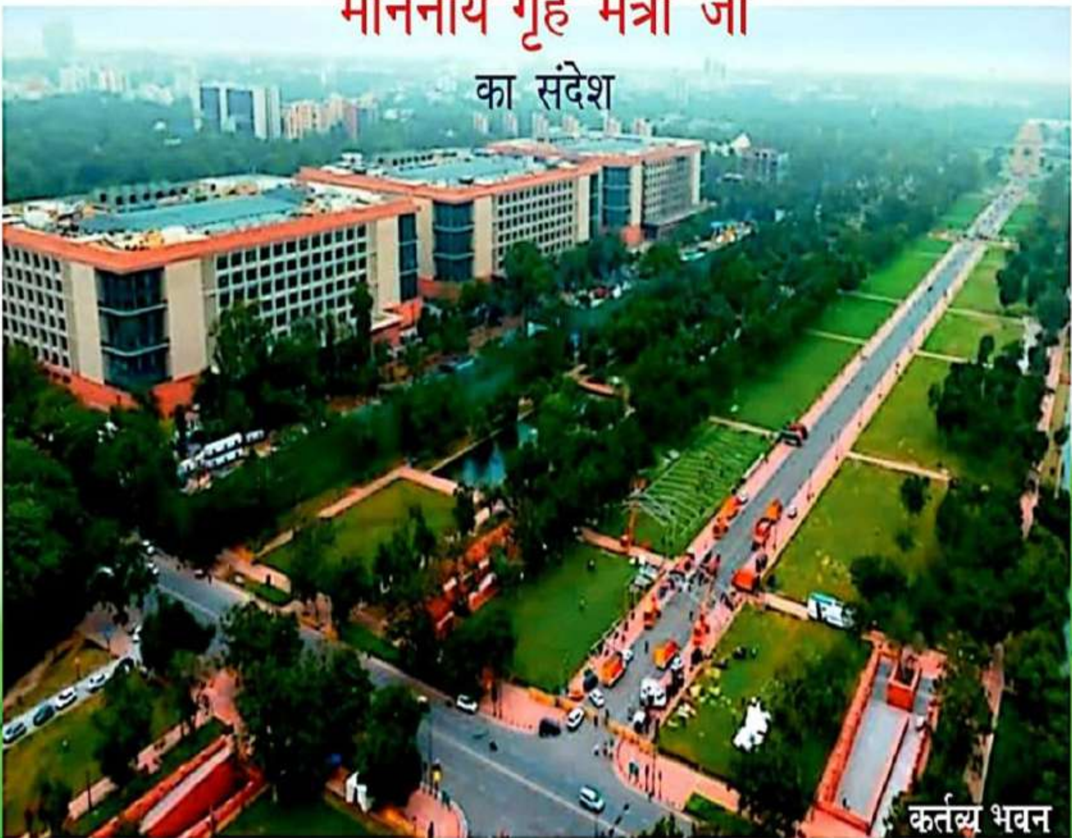

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

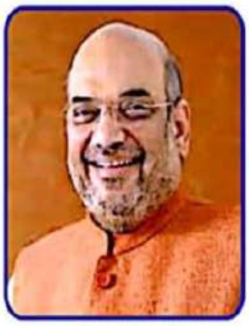

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

‘राजभाषा कीर्ति पुरस्कार’

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में श्रेष्ठ पत्रिका प्रकाशन कार्य के लिए यूको बैंक को को भारत सरकार की सर्वोच्च पुरस्कार ‘राजभाषा कीर्ति पुरस्कार’ के अंतर्गत वर्ष 2024-2025 के लिए ‘द्वितीय पुरस्कार’ प्राप्त हुआ है। यह पुरस्कार भारत सरकार द्वारा महात्मा मंदिर कन्वेंशन एवं एग्जिबिहिशन सेंटर, गांधीनगर में दिनांक 14 सितंबर, 2025 को आयोजित हिंदी दिवस समारोह एवं पांचवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री माननीय श्री अमित शाह जी के कर कमलों से बैंक के प्रबंध निदेशक एवं कार्यकारी निदेशक श्री विजय कुमार कामले ने प्राप्त किया। इस अवसर पर बैंक की मुख्य प्रबन्धक श्रीमती हेमलता तांतिया जी भी उपस्थित रही।

उल्लेखनीय है कि पिछले चार वर्षों में बैंक को लगातार चौथी बार राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ है जिसमें दो वर्ष ‘प्रथम पुरस्कार’ तथा एक वर्ष ‘द्वितीय पुरस्कार’ शामिल है और इस वर्ष पहली बार यूको बैंक की गृह पत्रिका अनुगूंज के लिए द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके साथ ही, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों हेतु भारत सरकार की योजना “नराकास राजभाषा सम्मान” के तहत बैंक के संयोजन में कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), कोलकाता को ‘ग’ भाषाई क्षेत्र के अंतर्गत “प्रथम पुरस्कार” प्राप्त हुआ।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय यूकोजन,
आप सभी को हिंदी दिवस - 2025 की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ!

भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि वह जीवंत चेतना है जो राष्ट्र की आत्मा को स्वर देती है। इसी चेतना की स्वर्णिम उपलब्धि के रूप में राजभाषा हिंदी हमारी संस्कृति, संस्कार और अस्मिता को आलोकित करते हुए जन-जन के हृदय को जोड़ने वाला वह सेतु बन चुका है, जिस पर भारत विकास के सोपानों को सहजता से पार कर रहा है। हिंदी ने अपनी परंपराओं को सँजोते हुए अन्य भाषाओं के रत्नों को आत्मसात कर एक बहुरंगी गंगा-जमुनी संस्कृति का निर्माण किया है।

संघ की राजभाषा नीति के प्रति यूको बैंक की प्रतिबद्धता एक सुदीर्घ साधना है, जो वर्ष 1974 से निरंतर हिंदी के अनुशासित अनुपालन में अभिव्यक्त हो रही है। भारत सरकार द्वारा राजभाषा कीर्ति पुरस्कारों से प्रतिवर्ष सम्मानित होना हमारी उसी निष्ठा का प्रमाण है। हमें गर्व है कि इस वर्ष हमारी हिंदी गृह पत्रिका "यूको अनुगूँज" को 'ग' क्षेत्र की सर्वोत्कृष्ट पत्रिका के रूप में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (द्वितीय) तथा नराकास (बैंक) कोलकाता को नराकास राजभाषा सम्मान (द्वितीय) से अलंकृत किया गया है। साथ ही, हमारे 8 नराकासों में से 6 नराकासों का उत्कृष्ट प्रदर्शन, यूको बैंक की सामूहिक भाषायी चेतना का दर्पण है। इन विजयी नराकासों के अध्यक्षों एवं सदस्य सचिवों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इस उपलब्धि को समस्त यूकोजन को समर्पित करता हूँ, जिन्होंने हिंदी को केवल भाषा नहीं, कार्य संस्कृति का अभिन्न अंग बनाने में महती भूमिका निभाई है।

राजभाषा हिंदी केवल कार्य की भाषा नहीं, हमारी आत्मा की अभिव्यक्ति है। यूको बैंक परिवार का प्रत्येक सदस्य इसके अनुपालन में पूर्ण समर्पण और तन्मयता से जुड़ा है। प्रेरणा, प्रोत्साहन और पुरस्कार के माध्यम से हम न केवल हिंदी को कार्यालयीन जीवन में सहज बना रहे हैं, बल्कि तकनीकी नवाचारों के साथ उसे आधुनिक कार्य संस्कृति में भी आत्मसात कर चुके हैं। हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर मेरी यह अपेक्षा है कि सभी कार्मिक **हिंदी को केवल नियम नहीं, नियमित व्यवहार बनाएं**, क्योंकि हिंदी का सम्मान, राष्ट्र का सम्मान है।

हिंदी को जनमानस की भाषा बनाने के लिए हमें दृढ़-संकल्प होकर कार्य करना होगा। यह सिर्फ सरकारी कार्यालयों की भाषा नहीं बनें अपितु हमारे देश की आम जनता के लिए **सरल, सुलभ और सुग्राही** भाषा बनें। इसके लिए हमें न केवल हिंदी को अपनाना है, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति भी सम्मान और जिज्ञासा बनाए रखनी होगी। जब हम भाषाएँ सीखते हैं, तो संस्कृति से संवाद, सभ्यता से साक्षात्कार और समाज से आत्मीयता स्वतः जुड़ जाती है। जब हम भाषाओं का सम्मान करते हैं, तो हम संबंधों का विस्तार करते हैं और यही शक्ति भारत को एकसूत्र में पिरोती है।

हिंदी दिवस-2025 के इस पावन अवसर पर हम सभी यह संकल्प लें कि कार्यालय का प्रत्येक कार्य राजभाषा हिंदी में पूर्ण तन्मयता और निष्ठा के साथ संपन्न करें। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम का अक्षरशः अनुपालन हमारी भाषायी प्रतिबद्धता का प्रतीक बने। प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हम न केवल प्रतिभा को मंच देंगे, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रति उत्साह, प्रेरणा और सकारात्मकता का वातावरण भी निर्मित करेंगे। आइए, हम सब मिलकर इसे अपने कर्म की भाषा बनाएं, हृदय से हिंदी अपनाएँ — यही सच्चा राष्ट्र सम्मान है।

(अश्वनी कुमार)
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

Azadi Ka Amrit Mahotsav
G20
DIGITAL BANKING Products
Wallet
AI based Chatbot
Mobile Banking
Self Service Kiosks
WhatsApp Banking
Internet Banking
Debit/ Prepaid Cards
ATMs & Cash Recyclers
POS
Fastag
UPI 123
Rupay on the Go
QR Code with Sound Box
Digital Lending
Fee collection module
यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust

यूको बैंक
UCO BANK
Book your perfect summer getaway with
UCO mBanking Plus
Book Flights, Bus and Hotels effortlessly
HOTEL
Scan to download
For Android Users
For iOS Users
UCO mBanking PLUS
XXXXXXXXXXXXXXXX
Last login Feb 25, 2024
Loyalty Rewards Point
PPF
PPF account Opening
PPF Standing Instruction Create
PPF Standing Instruction View/ Delete
Apply for Loan
Apply for Pre-approved Loan
Loan against Deposit
Home Loan
Personal Loan
More
Shopping
LifeStyle E-marketplace
Loyalty Rewards
Travel MarketPlace
Flight
Bus
Hotel
Home
My favourites
My Profile
Manage Cards
T&C Apply*
1800-103-0123 (Toll Free)
8334001234
7666399400
Follow us